[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

H

Sr. No. of Question Paper : 602

Unique Paper Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi : B

Name of the Course : **B.COM. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. प्रेमचंद युगीन हिंदी कहानी के विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

खड़ी बोली गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. 'गुंडा' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'पक्षी और दीमक' कहानी के केंद्रीय भाव का विश्लेषण कीजिए।

3. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'वैष्णवता और भारतवर्ष' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

4. 'अंधेर नगरी' में अभिव्यक्त राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

स्वाभिमानी बिबिया के दारुण जीवन का विश्लेषण अपने शब्दों में कीजिए।

5. निम्नलिखित किसी **'एक'** पर टिप्पणी लिखिए : (7)

(i) भारतेंदु युगीन निबंध

(ii) संस्मरण

(10 + 10)

6. किन्हीं 'दो' की व्याख्या कीजिए :

(क) भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहिं अमले अरु प्यादे।

अंधाधुंध मच्यौ सब देसा। मानहु राजा रहत विदेसा।।

गो द्विज श्रुति आदर नहिं होई। मानहु नृपति विधर्मी कोई।।

ऊंच-नीच सब एकहिं सारा। मानहु ब्रह्म-ज्ञान बिस्तारा।।

अंधेर नगरी अनबूझ राजा। टके सेर भाजी टका सेर खाजा।।

अथवा

जहां तक बिबिया का प्रश्न था, वह पति के व्यवहार से विशेष संतुष्ट न होने पर भी उससे रुष्ट नहीं थी। अभिमानी व्यक्ति अवज्ञा के साथ मिले हुए अधिक स्नेह का तिरस्कार करके वीतरागता के साथ आदर भाव को स्वीकार कर लेता है। झनकू ने पत्नी में अनुराग न रखने पर भी अन्य धोबियों के समान उसका अनादर नहीं किया। यह विशेषता बिबिया जैसी स्त्रियों के लिए स्नेह से अधिक मूल्य रखती थी, इसी से वह रोम-रोम से कृतज्ञ हो उठी।

(ख) नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढना जहां कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते फिर लुप्त

हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ 'सोता' है जिससे सदैव प्यास बुझती रहती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता हैं इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ।

अथवा

कुछ लाख ही वर्षों की बात है, जब मनुष्य जंगली था; वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे। दांत भी थे, पर नाखून के बाद ही उनका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर धीरे-धीरे वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा।